COW REHABILITATION

गाय का यू तो पूरी दुनिया में काफी महत्व है लेकिल भारत के संदर्भ में बात की जाये तो प्राचीन काल से यह अर्थव्यवस्था की रीढ़ रही है। चाहे वह दुध का मामला हो या खेती के काम आने वाले बैलों को। वैदिक काल में गायों की संख्या व्यक्ति की समृद्धि का मानक हुआ करती थी। वैदिक संस्कृति संसार की सर्वोत्तम संस्कृति है। वेद के मनुष्य से अन्य प्राणियों के प्रति मित्रस्य चक्षषा समीक्षा महे – अर्थात् प्रत्येक प्राणि को अपना मित्र समझों, ऐसा व्यवहार करने का निर्देश दिया है।

स्व आ दमे सुदुधा यस्य धेनुः स्वधां पीपाय।।

– श्रृग्वेद 02/35/7

अर्थ – जिसके अपने घर में उत्तम दुग्ध देने वाली सुदूहा (आसानी से दुहने वाली) गौ है, वह अपनी शक्ति को सतत् बढ़ाता है।

अपने आसपास आपको अवारा और निराश्रित पशुओं के रूप में गौवंश ही सबसे ज्यादा दिखते और मिलते है। कितनी बड़ी बिडम्बना है कि जिस देश में गाय को माता का दर्जा दिया जाता है, उसी देश में गाय इतनी दयनीय स्थिति में है, कि उसे अपना पेट भरने के लिए पालीथीन तक खाना पड़ता है। सामान्यतः पशु पालक/किसान/पशुप्रेमी गोवंश को तब तक ही रखता है जब तक उसे उसमें दुध या उससे होने वाले बच्चें से लाभ की उम्मीद होती है, वरना वह उसे सड़क पर यू ही छोड़ देता है। इंसान किस हद तक स्वार्थी हो चुका है, इसकी कल्पना बहुत ही दयनीय है।

वर्ष 2019 के शुरूआत में राज्य सरकार ने निराश्रित गोवंश के लिए एक वृहद कार्य योजना की घोषणा की। प्रदेश के इतिहास में यह पहला मौका था जब किसी सरकार ने इस दुरूह कार्य को करने का बीड़ा उठाया। राज्य के समस्त ग्रामीण व शहरी स्थानीय निकायों – ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत, जिला पंचायत, नगर पंचायत, नगर पालिका, नगर निगमों में अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल की स्थापना एवं उसके क्रियान्वयन के विस्तृत रूपरेखा बनायी गयी।

प्रदेश के मुखिया के गृह जनपद होने के नाते सरकार की निराश्रित गोवंश के लिए अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल की स्थापना एवं संचालन कार्यक्रम अति महत्वपूर्ण हो गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न विभागों (राजस्व, नगर विकास, सिंचाई, कृषि, गन्ना, उद्यान, ग्राम्य विकास, पंचायती राज्य, समाज कल्याण, वन विभाग, लघु सिंचाई, नेडा, गृह विभाग एवं पशुपालन विभाग को शामिल किया गया। इस अति महत्वपूर्ण कार्यक्रम के लिए पशुपालन विभाग को प्रदेश स्तर पर नोडल विभाग नामित किया है।

गोरखपुर में वर्तमान में 24 कांजी हाउस, 20 अस्थायी छोटे गो आश्रय स्थल, एक वृहद गो आश्रय स्थल– गाजेगढ़हा, गोला बाजार, नगर निगम द्वारा संचालित – कान्हा उपवन, एक वृहद गो आश्रय स्थल नगर पंचायत बड़हलगंज, एक वृहद गो आश्रय स्थल नगर पंचायत सहजनवां में बनाये गये है। जिनमें कुल 2100 गोवंश रखे गये है (अद्यतन स्थिति)। कुछ माह पूर्व लगभग 2700 गोवंश मधवलिया, महराजगंज को भी भेजे गये थे।

प्रत्येक अस्थायी गोवंश आश्रय स्थल को समीप के पशुचिकित्सालय से जोड़ा गया है। जिससे पशुओं को 24 घंटे चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध रहे।

यह योजना पूर्ण रूप से सफल हो सके, सरकार ने इसके लिए विभिन्न विभागों को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से जोड़ा है। गो आश्रय स्थल में रखे गये गोवंश के भरण-पोषण, आवास,पानी एवं ठंड से बचाव के लिए पुख्ता इंतजाम किये गये है। गौवंश की मौत ना हो या कम से कम हो यही सबसे बड़ी प्राथमिकता है। पशुपालन विभाग के अधिकारी गौ आश्रय स्थलों पर लगातार रात में निरीक्षण कर रहे है। ठंड से बचाव के लिए मुख्य पशुचिकित्साधिकारी डा0 डी0 के0 शर्मा0 एवं उप मुख्य पशुचिकित्साधिकारी डा0 राजेश त्रिपाठी के पहल पर पशुपालन विभाग ने 'कपड़ा बैंक' (घर के पुराने कपड़े) योजना शुरू की है, जिसमें समाज से फटे-पुराने कपड़े खासतौर से मोटे कपड़े लेकर उसे सिलवा कर गौवंश के लिए ओढ़न तैयार कराये जा रहे जिससे ठंड से बचाव किया जा सके।

इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए सरकार ने सहभागिता योजना शुरू की है, जिसमें प्रत्येक इच्छुक पशुपालक/किसान को चार निराश्रित पशु (गोवंश) मुफ्त में दिये जा रहे है और साथ ही 900/- प्रति पशु प्रति माह की दर से 3600/- महीना सीधे पशुपालक/किसान के खाते में सरकार द्वारा जमा कराये जा रहे है।

सरकार इन आश्रय स्थल को इच्छुक व्यक्ति/ट्रस्ट/एन.जी.ओ. को संचालन हेतु देने पर विचार कर रही है। बशर्ते वो सारी शर्ते पूरी करता हों। इस क्रम में वृहद गो आश्रय स्थल गाजेगढ़हा, गोला बाजार को प्रयोग के तौर पर 'ध्यान फाउन्डेशन' को संचालन हेतु दिया गया है।

वर्तमान में गोरखपुर शहर को इस वृहद कार्यक्रम से छुट्टा/निराश्रित गोवंश से छुटकारा मिलना शुरू भी हो गया है। अब सड़कों पर छुट्टा/निराश्रित पशुओं (गौवंश) की संख्या काफी कम हुई है।गौवंश द्वारा होने वाली दुर्घटनाओं में भी विशेष कमी आयी है।

पशुपालन विभाग ने अगस्त माह से पालतू गौवंश को चिन्हित कर शत-प्रतिशत टैगिंग योजना शुरू की है। पशुपालन विभाग एवं नगर निगम के संयुक्त तत्वावधान में लगभग चालीस वार्डो में समस्त गोवंश (पालतु)का शत-प्रतिशत टैगिंग किया गया है। जिससे पशुओं को सड़क पर छोड़ने पर उनके मालिक की पहचान हो सकें और उन पर जुर्माना लगाया जा सके तथा उन्हें ऐसा न करने के लिए हतोत्साहित किया जाये।

जिलाधिकारी महोदय के प्रयास से जन भागीदारी हेतु एक संस्था का रजिस्ट्रेशन 'गोकुल अस्थायी गोवंश आश्रम स्थल' कराया गया। जिससे जुड़ कर लोग स्वेच्छा से दान दे सकें। इच्छुक दानदाता सीधे संबंधित बैंक खातें में अपनी धन राशि जमा करा सकते है। यदि कोई दानदाता कैश धनराशि देना चाहे तो मुख्य पशुचिकित्साधिकारी कार्यालय में धन जमा कर रसीद प्राप्त कर सकता है।

मण्डलायुक्त महोदय ने मधवलिया गो सदन के लिए एक वृहद कार्यक्रम की योजना बनाई है जिससे मधवलिया गो सदन को गो अनुसंधान केन्द्र के रूप में विकसित किया जा सके। इस क्रम में एक स्वयंसेवी संस्था ए.पी.पी.एल. ने गौ संरक्षण, संवर्द्धन, स्वावलम्बन - सहभागिता विषयक संगोष्ठी का आयोजन पशुपालन विभाग के सहयोग से 'संवाद भवन', दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर में दिनांक 2 दिसम्बर 2019 को आयोजित किया। संगोष्ठी में श्री अजीत महापात्रा, गौ सह सेवा प्रमुख श्री सुनील मानसिंहका, सदस्य कामधेनु आयोग भारत सरकार, मण्डलायुक्त श्री जयंत नार्लिकर,

जिलाधिकारी श्री के0 विजयेन्द्र पाण्डियन, नगर आयुक्त, विभिन्न जिलों से आये मुख्य विकास अधिकारी, गोरखपुर के मुख्य प्रशुचिकित्साधकारी डा0 डी0 के शर्मा, डा0 राजेश, डा0 एस0 के0 सिंह, डा0 साठे, डा0 उपाध्याय एवं विभिन्न जिलों से आये पशु चिकित्साधिकारीगण, पशु पालक एवं किसानों ने इस संगोष्ठी में सहभागिता की। सभी वक्ताओं ने गोवंश के प्रति दया करने तथा सरकार द्वारा किये जा रहे कार्यो में सहयोग के लिए जन सहभागिता सुनिश्चित करने पर बल दिया। श्री मानसिंहका एवं श्री अजीत महापात्रा द्वय ने विस्तार से बताया कि दूध न देने वाली गायें किस तरह पशुपालकों/किसानों के लिए लाभाकारी हो सकती हैं। श्री मानसिंहका ने इसके लिए गो अनुसंधान के न्द्र देवलापार, नागपुर में निःशुल्क प्रशिक्षण के लिए इच्छुक पशुपालकों/किसानों को आमंत्रित किया। जिलाधिकारी महोदय ने अपने उदबोधन में गोवंश के प्रति दया भाव रखने तथा पशुपालकों को सिर्फ दुध के लिए गो पालन के प्रति सचेत भी किया। मण्डलायुक्त महोदय ने कड़े शब्दों में पशुपालकों को सड़क पर छुटटा गोवंश न छोड़ने की हिदायत दी। साथ ही देवलापार की तरह मधवलिया गो सदन को भी गो अनुसंधान केन्द्र के रूप में विकसित करने हेतु निर्देश दिया।

500 एकड़ में फैले इस क्षेत्र को गो अनुसंधान एवं अभ्यारण के रूप में विकसित कर पर्यटन के क्षेत्र में एक गैर-परम्परागत स्थल के रूप में विकसित करना है, जिसमें देशी नस्ल की गायों एवं विलुप्तप्राय गौवंश के संरक्षण एवं संवर्द्धन की दिशा में एक सार्थक प्रयास हो सके।

गो अनुसंधान केन्द्र के स्थापना से उस क्षेत्र में विकास के नये द्वार खुलेंगे। एक तरफ हमारी देशी नस्ल के प्रजातियों का संरक्षण एवं संवद्धर्न हो सकेगा एवं साथ ही साथ निराश्रित गोवंश को एक प्राकृतिक आश्रय स्थल भी मिल सकेगा। नये रोजगार के अवसर उत्पन्न होंगे तथा साथ ही लोगों को गो पालन के लिए प्रोत्साहित भी किया जा सकेगा । पशुओं में बीमारियों से बचाव एवं अधिकतम उत्पादन हेतु अनुसंधान कार्य भी किये जा सकेंगे।

प्रदेश के मुख्यमंत्री ने गोरखपुर में एक पशुचिकित्सा महाविद्यालय खोलने की अनमुति देकर इस क्षेत्र में शैक्षणिक एवं तकनीकी विकास एवं लोगों के सृमद्धि के लिए एक नया अवसर दिया है। चरगावां कृषि फार्म पर यह कालेज बनना सुनिश्चित है।

इस महाविद्यालय में दो कैम्पस होंगे। एक बड़ा कैम्पस 30.6 एकड़ का चारगावां ब्लाक में जिसमें शैक्षणिक कार्य, प्रशासनिक भवन, प्राचार्य, आचार्य एवं छात्र-छात्राओं के लिए आवासीय काम्पलेक्स, एक बड़ा डायग्नोस्टिक सेन्टर के साथ ओ.पी.डी. काम्पलेक्स, इनडोर एवं आउटडोर गेम के लिए मैदान, आडीटोरियम एवं और भी अन्य संसाधन प्रस्तावित है। लगभग 325 करोड़ की लागत से बनने वाले इस महाविद्यालय से इस क्षेत्र में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से विकास की सम्भावनाएं बढ़ेगी।

महाविद्यालय में लगभग 80 छात्रों का चयन एक वर्ष में होगा। पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय, मथुरा से सम्बद्ध यह महाविद्यालय पूर्वान्चल के लिए मील का पत्थर साबित होगा। सभी प्रकार पशु बीमारियों पर अनुसंधान के साथ-साथ पशुओं से मनुष्यों एवं मनुष्यों से पशुओं को होने वाले विभिन्न प्रकार के बीमारियों (जूनोटिक) पर लगाम लगाया जा सकेगा। पूर्वान्चल में 'नौवकी बीमारी' के रूप में प्रसिद्ध 'जापानी इंसेफ्लाइटिस/ ए.ई.एस. बीमारी' पर शोध एवं उन्नमूलन हेतु बाबा राघव दास मेडिकल कालेज,

एन.आई.वी., आई.सी.एम.आर. के साथ यह प्रस्तावित कालेज अहम भूमिका में होगा। साथ ही उच्च उत्पादन क्षमता वाले देशी गायों को पालने के लिए यहां के पशुपालकों को प्रोत्साहित किया जा सकेगा।

विभाग अपनी दैनिक कार्यो यथा – चिकित्सा, बधिया, टीकाकरण, कृत्रिम गर्भाधन एवं चारा विकास को लक्ष्य के अनुरूप कर रहा है साथ ही साथ विभाग ने पहली बार अतिरिक्त चारा विकास कार्यकम का आयोजन प्रत्येक पशु चिकित्सालय स्तर पर किया है जिसमें गोरखपुर जिले ने 60 कुंतल जई, 75 कुंतल यूरिया, 42 कुन्तल डी.ए.पी. का निःशुल्क वितरण 600 पशुपालकों के बीच किया है।

जिले में अब तक कुल 1350000 टीकें पशुओं में लगाये जा चुके है और यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया है कि शत-प्रतिशत पशुओं को आच्छादन इस योजना में हो सके।

भारत सरकार द्वारा चलायी जा रही राष्ट्रीय गोकुल मिशन योजना के अन्तर्गत गोरखपुर जिले में निःशुल्क 20,000 सीमेन का लख्य रखा गया है। प्रत्येक पशु चिकित्सालय के अंतर्गत 4 से 6 गावों का चयन किया गया है। इस स्कीम में प्रत्येक गोवंश को 3 बार निःशुल्क कृत्रिम गर्भाधान (3 साइकिल में) करने का प्रावधान है।

नई सेक्सड सार्टेड सीमेन योजना जिसमें सिर्फ बछिया ही जन्में गी के अंतर्गत 347 गोवंश का कृत्रिम गर्भाधान किया जा चुका है। यह योजना आने वाले वर्षो में पशुपालकों/किसानों की आय तो बढ़ायेगी ही साथ ही साथ निराश्रित नर गोवंश से समाज को छुटकारा भी मिलेगा। इस सीमेन से जन्मी हुई बछिया अधिक उत्पादन एवं कम बीमारी वाली गाय होगी। विभाग द्वारा इस योजना के प्रचार -प्रसार के लिए व्यापक इंतजाम किये गये है।

सामान्य कृत्रिम गर्भाधान से अब तक 145477 पशुओं में कृत्रिमत गर्भाधान किया जा चुका है।

विभाग द्वारा प्रत्येक माह विभिन्न ग्राम पंचायतों में बहुद्देशीय कैम्प का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष लगभग 400 कैम्पों का आयोजन किया गया।

प्रधानमंत्री द्वारा शुरू की गई पं0 दीनदयाल उपाध्याय पशु आरोग्य मेला के अंतर्गत इस वर्ष ब्लाक स्तरीय 57 पशु आरोग्य मेलें का आयोजन किया जा चुका है साथ ही साथ मण्डल स्तर पर एक वृहद पं0 दीनदयाल उपाध्याय पशु आरोग्य मेलें का आयोजन फरवरी 2020 में प्रस्तावित है।

सरकार की प्राथमिकताओं को देखते हुए पशुपालन विभाग मुख्य रूप से गो आश्रय स्थल, राष्ट्रीय गोकुल मिशन, सेक्सड सार्टेड मिशन, अतिरिक्त चारा बीज उत्पादन योजना पर विशेष ध्यान देते हुए समय-समय पर समीक्षा कर उचित निर्देश देता है। जिससे कि एक तरफ निराश्रित गोवंश को बचाया जा सके वही दूसरी तरफ गो पालकों को गो पालन हेतु विभिन्न योजनाओं के माध्यम से प्रोत्साहित किया जा सके। गो पालन से जन सामान्य कैसे लाभ ले सकें यह भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। हमें आशा है कि हम सरकार के इस भागीरथी प्रयास की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए अपने कर्तव्यों का पालन करते रहेंगे।